RNI Reg. No. HARBIL / 2009 / 28056 Postal Regd. No. P/ROHTAK25/2010-12

SAKSHAM

Volume–3, Issue–9 Fortnightly 1-August-2011 Per Copy 5/- Annual Subscription 120/-

एक थीं गौरा देवी........

हर कोई चिपको आन्दोलन के बारे में जानता है परन्तु उत्तराखंड की उन महिलाओं के बारे में कम ही लोग जानते हैं जिन्होंने जंगलों की रक्षा करना अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य बना लिया था| उन्होंने अपने जीवन के अंत तक वृक्ष लगाये हालाँकि वे जानती थीं कि उन पेड़ों पर लगे फलों का स्वाद वे नहीं चख पाएंगी परन्तु वे कहती थीं कि उन फलों का स्वाद उनकी अगली पीढियां अवश्य लेंगीं | उत्तराखंड की महिलाएं इस भावना को भली प्रकार से जानती व् समझती हैं और इसी भावना से जंगलों की तरफ देखती हैं |

एक महिला जिसे उत्तराखंड की आने वाली पीढियां कभी नहीं भूल सकती वे हैं गौरा देवी, जिन्होंने अपने क्षेत्र की महिलाओं को अपनी प्राकृतिक विरासत जंगलों व् वृक्षों की रक्षा के प्रति जागृत किया| गौरा देवी ने कभी औपचारिक शिक्षा ग्रहण नहीं की और न ही वे कभी स्कूल गयीं| उनका जन्म 1925 में चमौली जिले के एक छोटे से गाँव लाटा में मारछा जनजाति में हुआ था| उन्हें अपने परिवार के उन से जुड़े पारंपरिक व्यवसाय का अच्छा ज्ञान था | 12 वर्ष की छोटी सी उम्र में उनका विवाह रैणी गाँव के नैन सिंह और हीरा देवी के पुत्र मेहरबान सिंह से हुआ| पशुपालन, उनी कारोबार और संक्षिप्त सी खेती थी उनकी| दुर्भाग्यवश 22 वर्ष की छोटी उम्र में उनके पति का स्वर्गवास हो गया, उस समय उनका बेटा चन्द्र सिंह मात्र ढाई वर्ष का था|

गौरा देवी ने अपने पारंपरिक उन के कारोबार को अपने हाथों में ले लिया और अकेले ही अपने बेटे चन्द्र सिंह की देखभाल की| बेटे के बड़े होने पर घर की जिम्मेदारी उसे सौंप दी परन्तु इस इलाके की गरीबी ने उन्हें जो सबक सिखाया था उसे वे कभी नहीं भूलीं| वे पंचायत तथा अन्य सामूहिक कार्यकलापों में सक्रिय रहीं| इसीलिए 1972 में चिपको आन्दोलन के शुरू होने पर रैणी की महिलाओं के आग्रह पर वे 'महिला मंगल दल' की मुखिया बनीं|

चिपको आन्दोलन की जागरूकता आस पास के सभी इलाकों में फ़ैल चुकी थी| गौरा देवी ने लोगों को जागरूक करने के लिए अनेक अभियान चलाये| न केवल महिलाओं ने अपितु इलाके के अन्य लोगों ने भी जंगलों के महत्त्व को पहचाना| गौरा देवी ने सदा जंगलों की तुलना देवताओं से की, इसीलिए जब सरकार ने रैणी के जंगलों को काटने का फैसला लेते हुए एक ठेकेदार को यह काम सौंप दिया तो रैणी के लोगों की प्रतिक्रिया सरकार विरोधी हो गयी| यह बात उन्हें तब पता चली जब जंगलों को काटने की तारीख 25 मार्च 1974 तय हो चुकी थी| लोगों का प्रदर्शन स्वाभाविक

था| उस दिन वन अधिकारी कुछ मजदूरों को साथ लेकर जंगल की तरफ बढ़ने लगे| एक छोटी बच्ची ने यह सब देखा और भागते हुए गौरा देवी को सूचित किया|

कटाई के दिन गाँव में कोई भी पुरुष मौजूद नहीं था क्योंकि जंगलों की कटाई के लिए वही दिन निश्चित किया गया था जो दिन खेतों के मुआवज़े को बाँटने के लिए तय किया गया था, जो खेत 1962 में सड़क बनने से कट गए थे| इसलिए सभी पुरुष चमौली गए हुए थे | गौरा देवी और रैणी की 27 महिलाएं जंगल की तरफ चल पड़ीं| जल्दी ही वे अधिकारीयों और मजदूरों के समूह के पास पहुँच गयीं| मजदूर खाना पका रहे थे | शुरू में महिलाओं ने उन्हें समझाने का प्रयत्न किया और खाना खा कर वन से चले जाने को कहा| अधिकारियों ने पहले से ही शराब पी रखी थी| उन्होंने महिलाओं को बुरा भला कहा और मजदूरों को आगे बढ़कर पेड़ काटने का आदेश दिया| सभी महिलाऐं एक पंक्ति बना कर पेड़ों की ढाल बनकर खड़ी हो गयीं| ऐसा लग रहा था मानो साक्षात् नंदा देवी ने पेड़ों की रक्षा के लिया आक्रामक रूप ले लिया हो | गौरा देवी के भीतर का रौद्र रूप तब प्रकट हो गया जब एक मजदूर ने उनकी तरफ बन्दूक का निशाना साधा | उन्होंने बिना भयभीत हुए रौद्ररूप में अपनी छाती खोल दी और बोलीं- 'चलाओ गोली और काट लो सारे पेड़'| गौरा देवी की गरजती आवाज़ सुन कर मजदूरों में भगदड़ मच गयी | मजदूर नीचे खिसकने लगे| मजदूरों की दूसरी टोली जो राशन लेकर आ रही थी को भी रोक दिया गया| सभी नीचे चले गए| ऋषि गंगा के किनारे जो सीमेंट का पुल है उसे भी महिलाओं ने तोड़ डाला ताकि फिर कोई जंगल की तरफ न आ सके| महिलाओं ने रात भर जंगलों की निगरानी की|

गाँव के पुरुष जो चमौली गए हुए थे उन्हें कुछ लोगों ने जंगलों की कटाई की तारीख के बारे में बताया | उन्हें पूरा विश्वास था कि जब वे लोग वापिस जायेंगे तो उन्हें हरे भरे जंगलों के स्थान पर वीरान रैणी मिलेगा परन्तु रैणी की महिलाओं ने उन्हें गलत साबित कर दिया| रैणी ने आत्मसमर्पण नहीं किया था क्योंकि रैणी की महिलाओं ने हार नहीं मानी थी और जंगल में खड़े हरे भरे वृक्ष उनकी जीत का प्रमाण थे|

अगले दिन चिपको आन्दोलन के नेता रैणी पहुँच गए और गौरा देवी ने जो कुछ भी हुआ था, सब उन्हें बताया| गौरा देवी ने नेताओं से अनुरोध किया कि वे वन अधिकारियों के खिलाफ कोई शिकायत पुलिस से न करें क्योंकि ऐसा करने से उनकी नौकरी को खतरा हो सकता था|

रैणी के लोग उस दिन को और उसमे गौरा देवी के योगदान को कभी नहीं भूल सकते| गौरा देवी ने और भी बहुत अभियान चलाये तथा अनेक महिलाओं को अपने साथ शामिल किया| जब भी वन संरक्षण के लिए नीति निर्माण हुआ तो अनपढ़ होने के कारण गौरा देवी को कभी नहीं बुलाया गया| रैणी की महिलाओं को केवल फल संरक्षण तथा आलू चिप्स बनाने का प्रशिक्षण दिया गया जिसका उन्हें कोई सार्थक लाभ नहीं हुआ|

वास्तव में गौरा देवी के बारे में अधिक लोग नहीं जान पाते यदि 'Himalayan Action Research Center, Dehradun' उन पर एक पुस्तक प्रकाशित नहीं करता| 66 वर्ष की उम्र में वर्ष 1991 में गौरा देवी ने हिमालय की गोद में बसे रैणी गाँव में अपनी आखिरी साँसें लीं| रैणी के लोग अपनी आने वाली पीढ़ियों को गौरा देवी की कहानियां सुनाते हैं और गौरा देवी के बारे में जानकर बच्चों का सर गर्व से ऊंचा हो जाता है|

श्वेता गुप्ता
सह संपादक, सक्षम

हौंसले की एक अनोखी मिसाल - एस. रामकृष्णन

एस रामकृष्णन आज उम्र के छटवें दशक में हैं| उन्होंने तमिलनाडु में सिर्फ पांच बच्चों के साथ अमर सेवा संगम नामक नर्सरी स्कूल की शुरुआत की थी| आज यह अपनी साढ़े तीन सौ शाखाओं के साथ तिरुनेल्वली जिले के चार ब्लोकों में फैला हुआ है और करीब छ: लाख की आबादी तक अपनी सेवाएँ पहुंचा रहा है | जिस सशस्त्र बल की नियुक्ति के दौरान हुई दुर्घटना में वे विकलांग हो गए थे, उसी के एक अधिकारी की प्रेरणा से आज तिरुनेल्वली में रामकृष्णन को बच्चा बच्चा जानता है| बात 1975 की है| अइकुड़ी के रहने वाले रामकृष्णन तब मेकेनिकल की पढाई कर रहे थे| उन्होंने सशस्त्र सेनाओं में नियुक्ति के लिए परीक्षा दी| एक पेड़ से छलांग लगते वक़्त वे सीधे ज़मीन पर पीठ के बल आ गिरे, जिसके कारण उनका धड संज्ञाशून्य हो गया | इस सदमे से उबर पाना उनके लिए काफी मुश्किल था | बेंगलुरु के कमांड हॉस्पिटल और पुणे के सेना अस्पताल में इलाज के बाद वे अपने घर लौट आये| ठीक न होने की बात जानकार वे अवसाद में चले गए| उनके परिवार को उस दौर में काफी परेशानी झेलनी पड़ी|

अँधेरे के बीच उन्हें पुणे अस्पताल के अपने डॉक्टर और मेंटर एयर मार्शल अमर सिंह चहल की बात याद आई -'अपने जीवन में कुछ उपयोगी करो' इन्ही शब्दों से प्रेरणा लेते हुए रामकृष्णन ने वर्ष 1981 में अमर सेवा संगम की शुरुआत की| अपनी संस्था का नाम उन्होंने एयर मार्शल अमर सिंह चहल के नाम पर रखा| तब उनके पास कुछ स्वैच्छिक कार्यकर्ता थे, जो विकलांग बच्चों को वहां ले आते थे|

धीरे धीरे लोगों का भरोसा संस्था पर जमने लगा|

श्री एस. रामकृष्णन विकलांगों के कल्याण हेतु विशिष्ट योगदान के लिए भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर ए. पी. जे. अब्दुल कलाम से राष्ट्रीय पुरस्कार ग्रहण करते हुए

1984 में यह संस्था रोटरी क्लब के साथ मिलकर पोलियो टीकाकरण शिविर और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने लगी| आज रामकृष्णन के नर्सरी स्कूल में करीब 200 बच्चे हैं और प्राथमिक स्कूल में भी इतने ही बच्चे हैं| संस्था के भीतर इंदिरा गाँधी मुक्त विश्व विद्यालय का शिक्षण केंद्र भी स्थापित हो गया है जिससे बच्चों को पढाई के लिए दूर नहीं जाना पड़ता|

1992 में चेन्नई में एक युवा लेखाकार एस शंकर रमन, जो कि पेशीय दुर्विकास (Muscular Dystrophy) से ग्रसित थे, अपने आकर्षक अभ्यास को छोड़कर एस रामकृष्णन के साथ विकलांगों के लिए कुछ करने के उनके सपने को पूरा करने में उनके साथ आकर मिल गए| उनका सपना अमर सेवा केंद्र को विकलांगों की सभी ज़रूरतों को पूरा करने वाला एक मॉडल केंद्र बनाने का है|

वह संगठन जो मुट्ठी भर बच्चों के साथ शुरू हुआ था आज हजारों विकलांगों को अथाह सेवा प्रदान करने वाला एक इंस्टीट्युशन बन गया है| रामकृष्णन की विरासत अमर सेवा संगम के रूप में अमर रहेगी|

संदीप शर्मा - सक्षम

Please visit https://www.amarseva.org

DIGITAL EMPOWERMENT FOUNDATION eNGO .org advance your mission

Empowering Grassroots Organizations at Village, Panchayat & Tehsil level.

A National movement to make grassroots organizations ICT Enabled with Website Designing & Training to manage their Websites independently.

eNGO FEATURES

1. .org Domain Name for your Website (e.g. www.yourngo.org)
2. Website hosting space on our own dedicated server.
3. Website designing with modern themes.
4. Content uploading (unlimited pages, images, videos).
5. Emails @ your Domain (like—president@yourngo.org).
6. Technical Support (full satisfaction & speedy).
7. Manual to update your site without any external help.
8. eNGO networking platform for partnerships.
9. Other technical services on demand.
10. 24 X 7 online email support.

For eNGO Details, Please Contact

Digital Empowerment Foundation
House No. 44, 3rd Floor (Next to Naraina IIT Academy)
Kalu Sarai, (Near IIT Flyover), New Delhi – 110016
Tel: 91-11-26532786 / Fax: 91-11-26532787
Email: def@defindia.net URL: www.defindia.net

---

eNGO Workshop on August 20, 2011 at Panchkula, Haryana.

For Registration Contact:

IDEA INNOVATION ENTERPRISE 2002 SGK Sristi Gyan Kendra

SRISTI GYAN KENDRA
(Regional Partners)
675/25 Patel Nagar, Rohtak—HARYANA

Contact Person : Shveta Gupta [9878465415]
Email : shveta@sgk.in

आमंत्रण

सक्षम एक पाक्षिक सूचना पत्र है जो नवप्रवर्तन, पारंपरिक एवं मूलभूत ज्ञान और सामजिक सृजनात्मकता जैसे संवेदनशील मुद्दों की तरफ आपका ध्यान आकर्षित करता है| सक्षम की पूरी टीम 1 अप्रैल, 2009 से इस काम को पूरे समर्पण भाव के साथ करने में जुटी है|

यदि आपके परिवार में या आपके आसपास कोई ऐसा व्यक्ति है जो नवप्रवर्तन, पारंपरिक एवं मूलभूत ज्ञान और सामजिक सृजनात्मकता का उत्कृष्ट उदाहरण है तो उस व्यक्ति की कहानी सक्षम पत्रिका आमंत्रित करती है| आप सब से निवेदन है कि आप हमें उस व्यक्ति के बार में जानकारी / लेख (फोटो सहित) भेजें| आप यह सूचना हमें निम्नलिखित पते पर डाक द्वारा या ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं|

सक्षम कार्यालय
675 /25, पटेल नगर
रोहतक - हरियाणा
124001

ई-मेल : sakshamlive@gmail.com
मोबाइल न. : 9215514437

छैल-मक्खी - किसान मित्र कीट।

छैल मक्खी अन्य छैल को खाते हुए।

छैल-मक्खी (Damsel fly) चौमासे (आमतौर पर जून, जुलाई और अगस्त) के दौरान विभिन्न फसलों में उड़ते हुए नजर आने वाली एक महत्वपूर्ण कीटखोर मक्खी है। हरियाणा में इसे तुलसा के नाम से जाना जाता है। लंबे, संकरे व पारदर्शी पंखों वाली ये मक्खियाँ कई रंगों में पाई जाती हैं। इन्हें लोपा-मक्खियों (Dragon flies) के मुकाबले कमजोर उड़ाकू माना जाता है। उड़ने की प्रतियोगिता में उपरोक्त कीटों की हार-जीत से किसानों का क्या लेना-देना। किसानों के लिये तो यह जानकारी फायदेमंद है कि इस छैल-मक्खी के प्रौढ़ व अर्भक, दोनों ही मांसाहारी होते है। यह मक्खी अपने अंडे खड़े पानी में देती है। पानी चाहे गावं के जोहड़ या जोहड़ी में हो या फिर धान के खेत में हो। इस कीड़े के अर्भक पानी में पाये जाने वाले मच्छर के लार्वा समेत उन अन्य सभी कीटों का शिकार कर लेते हैं जो आकार में इनके बराबर या छोटे हों।

धान की फसल को हानि पहुँचाने वाले विभिन्न फुदकों का शिकार करने में इन्हें बहुत आनंद आता है। वैसे तो इस कीट के अर्भक पानी में रहते हैं लेकिन खाने के लिए अन्य कीड़ों की तलाश में धान के पौधों पर चढ़ने में इन्हें गुरेज नही होता। इस मक्खी की कुछ प्रजातियाँ तो मकड़ियों को भी खा जाती हैं, मकड़ी के जाले के पास मँडराते- मँडराते ही जाले में से मकड़ी को दबोच लेती हैं। भोजन के लिये अन्य कीड़ों का अभाव होने पर यह मक्खियाँ आपस में ही एक दूसरे को खा जाती हैं। शायद भोजन में इतनी विविधता के कारण ही भोजन श्रृंखला में इन्हे उच्च दर्जा हासिल है।

डॉक्टर सुरिंदर दलाल, जींद
प्रभात कीट पाठशाला
Please visit
http://www.drdalaljind.blogspot.com

SAKSHAM TEAM

Patron	Kaushlya Batra
Editor	Kamal Jeet
Subeditor	Shveta Gupta
Distribution	Sandeep Sharma
Marketing Head	Sanjeev Sharma
Administration	Dayal Singh
Technical Evaluation	Vikas Markanday
Photo Journalist	Prashant Markanday
Legal Advice	Deepak & DInesh Miglani
Content	Sumit & Sonia Kaushik
Creative Work	Pushpinder Kaur

Systematic **A**ugmentation of **K**nowledge among **S**ocieties & **H**unting un-**A**cknowledged **M**inds

SAKSHAM Fortnightly, Vol—3 Issue—9, 1-August -2011
प्रकाशक, संपादक, मालिक व् मुद्रक:**कमल जीत** ने 183/13, आचार्य प्रिंटिंग प्रैस, दयानंद मठ, गोहाना रोड, रोहतक से छपवाकर कार्यालय SAKSKAM 675/25, पटेल नगर, रोहतक-124001, हरियाणा, भारत से प्रकाशित किया|
RNI Reg. No. HARBIL/2009/28056
Postal Regd. No. P/ROHTAK25/2010-2012

TO

____

____

____

If undelivered please return to :
675/25 Patel Nagar, Rohtak-124001